

श्री गणेशाय नमः

जै जै अवधेश्वर प्रभु जै जै बृजवर ईश।
जै गुर नानक शाह जू जै अखण्डानन्द महीश॥
जै साईं अमां करुणा निधि प्रेम भक्ति दातार।
जै सन्त वृंद पावन चरण जगत उधारण हार॥

अथ गीत मञ्जूषा

साईं साहिब महिमा

(क) महिमा सप्तपदी

(१)

साक्षात् श्री वैकुण्ठ आ दिलिबर जो दीवान।
नारायण जियां नरलोक में साईं अ जो थमि शान॥
रहनि सभेई अदब में दिसी तेज महान।
साईं अ जे सत्संग जो गाए जस जहान॥
साईं दिये घणी सिकसां सनेहियुनि सनिमानु।
कढ़हीं रीझाइन राम खे कढ़हीं कुद्राइन कान्हु॥
पेट भरियाऊं प्रेमियुनि जा नीह खाराए नान।

सभेई हाजुरु हुकुम में कोन करे को मानु॥
लाल दिलियूं थियूं सभिनि जूं खाई प्रेम जो पान।
आशीशूं दियनि अबल खेजियें सिंधुड़ीअ जा सुलितान॥
मीरपुर खे प्रभु अ दिनो मालिकु महिरबानु।
रोजु अची सत्संग में कनि त्रवेणी अ स्नान॥
सभिनी खे सौभाग्य जो दिलिबर दिनो दानु।
भुलियो सभिनी भानु नशो पाए नीह जो॥

(२)

साई साहिबु मिठिड़ो सदा सेवकनि प्रतिपाल ।
सदबख्शंद ऐं पतित पावन जहिं जो विरदु विशाल ॥
क्रोड़ माउ जियां ममत में ढरियो रहे नितु ढोल ।
तन मन खे सदा शुद्धि कनि रही आनंद मंझि अडोलु ॥
बिन कारण कृपाल जियं प्यारो श्री रघुवीर ।
तियं अहेतुकी अनुरागु करे साई सन्तु सुधीर ॥
जियं भील कोल रिछ भोलिड़ा राघव निवाजिया ।
तियं कपटी कुटिल केतिरा अबल कया आज्ञा ॥
वृज में रही बाबल मिठे खोलियो महिर भण्डार ।
चयाऊं नामु जपियो निवड़तसां प्रभु तारण लाइ तियार ॥
जेकी महंगा हुआ मीरपुर में से सहांगा थिया बृज देश ।
धारियो गरीबी वेशु तेजु लिकाए त्रिलोक पति ॥

(३)

गरीबि श्री खण्डि खे दिनो सतिगुर सचे द्राणु ।
तवहीं कोकिलाऊं कुंज जूं प्रीतम वटि परिवाणु ॥
सदां रही सत्संग में करियो रूह रिहाणि ।
मस्त रहो महाराण में कढो न कहिं जी काणि ॥
देश प्रदेश झर झंग में सतिगुरु थींदव साणु ।
सत्संग हर्ष हुलास सां भरियो रहंदुव भाणु ॥
साकेत जे सरिकारि जी सिक में रहो सुजान ।
श्री पारिथिवि चन्द्र जे प्यार में पूतो रहेव प्राण ॥
अनुरागियुनि आशीश सां माणियो मालिक दर में मानु ।
नृमलु नूतन नींहड़ो जानिब रहेव जुवानु ॥
खावन्द खरिचीअ में दिनो प्रीतम पद निर्वाणु ।
परिची तवहां जे प्रीति ते प्रीतमु ईदो पाण ॥
मालिक जे मुहबत जो तवहां पूरणु पातो ज़ाणु ।
वहाए नींह नियाणु वसंदा रहो विन्दुर में ॥

(४)

साई चई साई चवां सदा चवंदो रहां साई ।
नची जपियां नितु नींह सां जियें सबाझल साई ॥
सुखी रहोमि श्रीजू चरण में वसंदो रहीं साई ।
सदां वर जे विन्दुर में वसंदो रहीं साई ॥

सत्संग नाम जे रंग जी नितु मौज लहीं साई ।
गाई गुण रघुवीर जा ठारीं ततियूं दिलियूं साई ॥

रीझाई रांझन खे मुहिंजा रंग भरिया साई ।
घुमीं गोपियुनि घर में सदां ठरीं साई ॥

खाली दिलियूं खलिक जूं भाव भरी साई ।
श्री आरियलि अनुराग जो अमृत पीं साई ॥

श्री जानिक चन्द्र जे जस में जुग जुग जीं साई ।
सदां हर्ष हुलास में खिलंदो रहीं साई ॥

सुखिड़ा देई सुहग खे शल सुख लहीं साई ।
आनन्द कन्द साई तवहां जो सत्संग सोभारो रहे ॥

(५)

महरबान मालिक मिठा जीवन धन साई ।
बापू तूं बालिणि जो गुरु देव गुसाई ॥

तवहां जे चरण नख चन्द्र जी शल थींदसि चकोरी ।
वचन सुगंधि मतिवालिड़ी थियां भाव मगनु भौरी ॥

चात्रिकि थींदसि चाह भरी कृपा स्वांति जी प्यासी ।
मछुली थी महिबूब जो माणियां सत्संग घोट मथां ॥

राई लूणु थी घोरियां सत्संग घोट मथां ।
जाचकु थी जानिब लाइ पिनां आशीशूं जितां किथां ॥

खीरड़े लाइ खावन्द जे थियां बकिरी बाझारी ।

गुहा झटे गरीबि हथां मुंहिंजो अबलु अवितारी ॥

सुख निवास जे सुहग जी कीरति नितु गायां ।

सदां मंगल मनायां मालिक मीरपुर मीर जा ॥

(६)

जय जय बाबल वीर जी जय करुणा सिन्धु कृपाल।

जय सत्संग सिरताज जी जय शरणागति प्रतिपाल॥

जय जय दान शिरोमणि जय दीन बन्धु दातार।

जय जय पालक प्रेम निधि जय जय परम उदार॥

जय जय शील सनेह सिन्धु जय जय सुखमा कंद।

जय जय जती शिरोमणि जय मालिक मीरपुर चन्द॥

जय गरीबि श्रीखण्डि गुण निधि जय निम्नता नीह निधान।

जय प्रेमी प्रीतम अबल जय मैगसि चन्द्र महरबान॥

जय जय गरीबि जीवन धन जय गरीबि हित रूप।

जय गरीबि जीवन औषद्धी जय गरीबि सुख सरूप॥

जय गरीबि चकोरी अ चन्द्रमा जय गरीबि चातक स्वांति।

जय गरीबि मानस राजहंस जय गरीबि हृदय कांति॥

जय गरीबि साहिब गरीबि साईं जय गरीबि प्राण आधार।

जय गरीबि हृदय हार श्रीखण्डिचन्द्र सुजान जय॥

(७)

जय गरीबि दिलि दूल्ह धणी जय गरीबि जीवन ज्योती।
जय गरीबि मीन जलाशय जय गरीबि पावन पोति॥
जय गरीबि आत्मा सियाराम सुवन जय गरीबि व्यापक राम।
जय गरीबि हर्ष हुल्लास निधि जय गरीबि मोर घनश्याम॥
जय गरीबि प्राणनि पालक प्यारा जय गरीबि जीवन जीय।
जय गरीबि सिर सुहाग मणि जय गरीबि प्रीतम पीय॥
जय गरीबि ग़मटारण प्रभु जय आनन्द कन्द अजीब।
जय गरीबि शोभा गरीबि सुषमा जय सर्वश गरीबि॥
जय गरीबि हिरणी कस्तूरका जय गरीबि कोकिल रसाल।
जय गरीबि नैनन पुतिलिका साई नैन विशाल॥
गरीबि श्री खण्डि चन्द्र जी जै जै उचारियूं।
साह साह में सम्भारियूं साई अमड़ि सुखनिधि॥

•